हंसता हुआ धर्म

मुल्ला नसरुद्दीन को फास्ट ड्राइविंग का बड़ा शौक था। एक दिन वे और उसने मित्र चंदूलाल अपनी-अपनी मोटर साइकिलों पर शाम गुजारने के लिए निकले। नसरुद्दीन की मोटर साइकिल एकदम तीर की तरह चल रही थी और चंदूलाल बार-बार पीछे छूट जाते। अचानक सामने से एक ट्रक आता हुआ दिखाई दिया, जिसकी दो लाइटें चमक रही थीं। लेकिन दूर से उसे देख नसरुद्दीन ने चंदूलाल से कहा कि देखो, अब इन दो मोटर साइकिल के बीच से किस तरह मैं अपनी मोटर साइकिल निकालता हूं! चंदूलाल ने उन्हें मना किया कि रहने भी दो, लेकिन वे न माने और तेजी से अपनी मोटर साइकिल ले गए। और वही हुआ जो होना था। भयंकर एक्सीडेंट हुआ। अस्पताल में मुल्ला को भरती किया गया। उनके शरीर पर फ्रैक्चर ही फ्रैक्चर हो गए थे। पूरे सात दिन बाद उन्हें होश आया। तो चंदूलाल उनसे मिलने गए और मुल्ला से हाल-चाल पूछा। मुल्ला से चंदूलाल ने कहा कि देखो, मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि इस प्रकार मोटर साइकिल न चलाओ।

मुल्ला नसरुद्दीन बोला, ऐसी की तैसी मोटर साइकिल की जी, पहले यह बताओ कि उन दो मोटर साइकिलों के बीच वह बिना बत्ती की मोटर साइकिल वाला कौन था? कौन था वह हरामजादा जिसकी गाड़ी में लाइट नहीं थी?

मुल्ला नसरुद्दीन होटल से बाहर निकल रहा है और होटल के बैरा ने कहा, बड़े मियां, टिप में सिर्फ एक अठन्नी! आप मेरा अपमान कर रहे हैं। कम से कम एक रुपया तो होना ही चाहिए।

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा, क्षमा करना भाई, एक अठन्नी और देकर मैं दुबारा तुम्हारा अपमान नहीं करना चाहता।

अहमदाबाद में डोंगरे महाराज का भागवत-सप्ताह चल रहा था। संयोजक के यहां डोंगरे महाराज अन्य पंडित-पुरोहितों के साथ भोजन कर रहे थे। एक कटोरी में बैंगन की सब्जी परोसी गई, तो डोंगरे महाराज ने उस कटोरी को उठा कर भोजन की थाली में से अलग कर दिया। पास ही बैठे पंडित पोपटलाल ने पूछा, क्यों महाराज जी, बैंगन की सब्जी आपने भोजन की थाली से निकाल कर अलग क्यों रख दी?

डोंगरे महाराज ने धीर-गंभीर मुद्रा में उत्तर दिया, कमाल है, पंडित जी, आपको इतना भी पता नहीं है कि सावन में बैंगन खाने से अगले जन्म में मनुष्य मूर्खो जैसी बातें करता है।

पंडित पोपटलाल ने डोंगरे महाराज को थोड़ी देर गौर से घूर कर देखा और कहा, महाराज, यह बात आपको पिछले जन्म में पता नहीं थी?

मुल्ला नसरुद्दीन शिकार खेलने गया। मुझसे भी कहा, आप भी आइए। मैंने कहा, भाई, मैं शिकार नहीं करता। नसरुद्दीन ने कहा, लेकिन मेरा शिकार देखना। तो मैंने कहा कि चलो। बड़े सज-बज कर मुल्ला ने शिकार का आयोजन किया। एक झील के किनारे एक उड़ते हुए हंस को—पंक्ति उड़ रही थी हंसों की—गोली मारी। किसी हंस को गोली लगी नहीं। मुल्ला मेरी तरफ देख कर बोला, देख रहे हैं, चमत्कार देख रहे है, मरा हुआ हंस उड़ रहा है! इसके पहले कि मैं कहूं कि गोली लगी ही नहीं, वह मुझसे बोला कि देख रहे हैं चमत्कार, इसको कहते हैं शिकार, हंस मर भी गया और उड़ रहा है।

मुल्ला नसरुद्दीन को किसी ने बाजार में चलते देखा; एक पैर में काला जूता पहने है, दूसरे में लाल। पूछा कि भइया, कोई नयी फैशन निकली है? एक जूता लाल एक काला! मुल्ला ने कहा नहीं जी, कोई फैशन नहीं निकली, यह उल्लू के पट्ठे उस दुकानदार की हरकत है। दो जोड़ी जूते खरीदे हैं, दोनों डिब्बों में ऐसे ही जूते बांध दिए है—एक काला, एक लाल।

चंदूलाल का बेटा झुम्मन एक दिन उससे कह रहा था कि 'पापा, वह नुक्कड़ पर जो जूतों की मरम्मत करने वाला चमार है, वह मुझसे आते-जाते अकसर कहता है कि तुम्हारे पिताजी ने जो पांच साल पहले मुझसे जूते सुधरवाये थे, उसकी मरम्मत के दो रुपये अभी तक नहीं चुकाये। उनसे कहो कि अब मेरे पैसे चुकायें।'

चंदूलाल झुम्मन से बोले कि 'उससे जा कर कहो कि भाई, इतना घबड़ाओ मत। जब उसकी बारी आयेगी, तो उसके पैसे भी चुका दिये जायेंगे। अभी तो उस दुकानदार के पैसे ही नहीं चुकाये गये, जिससे दस साल पहले ये जूते खरीदे गये थे, और यह पांच ही साल में हाय-तोबा मचाने लगा! अरे, धैर्य भी कोई चीज है! मनुष्य को धीरज रखना चाहिए।'

– (ओशो पुस्तकों से संकलित)